इकाई 4 संस्कृति विषय का बोधन और शब्दकोश का उपयोग

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 भारत के त्योहार

4.3 शब्दकोश का उपयोग

4.3.1 शब्द ढूँढना

4.3.2 शब्दार्थ ढूँढना

4.3.3 शब्दकोश से अन्य सूचनाएँ प्राप्त करना

4.4 सारांश

4.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अनुकार्य

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- हिंदी में संस्कृति संबंधी विषय को समझकर अपने शब्दों में प्रकट कर सकेंगे;
- संस्कृति संबंधी विषय को पढ़कर उसकी शब्दावली का उचित प्रयोग सीख सकेंगे; और
- शब्दकोश का सही प्रयोग कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

इससे पहले की इकाई विज्ञान विषय से संबंधित थी। यह इकाई संस्कृति विषय से संबंधित है। उक्त इकाई में हमने पढ़ा था कि कैसे मानव ने सभ्यता का विकास किया। किस तरह उसने अपने सामने आने वाली कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। मानव सभ्यता का आज तक का विकास मानव की जय यात्रा की ही कहानी है। लेकिन मानव की उपलब्धियाँ किसी एक व्यक्ति की प्रतिभा या श्रम का परिणाम नहीं है। मानव जाति का सामूहिक श्रम और क्षमता ही इनमें अभिव्यक्त हुई है। जब-जब मानव ने सामूहिक रूप से कुछ अर्जित किया, कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की, अपने को सांस्कृतिक रूप में उन्नत किया, तो ऐसे अवसरों को उसने त्योहारों की शक्ल दी। अपने जीवन को आनंद और उल्लास से भरने के लिए उन त्योहारों को अपने सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग बना लिया।

भारत का सांस्कृतिक इतिहास जितना पुराना है उतना ही गौरवमय भी। भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता त्योहारों में जीवंत रूप से व्यक्त होती है। हमारी इस इकाई का पाठ भारत के त्योहारों पर ही लिखा गया है।

इस इकाई में हम शब्दावली न देकर शब्दकोश के प्रयोग की विधि सिखा रहे हैं। शब्दकोश से हम केवल शब्दों के अर्थ ही नहीं जानते, उनके बारे में अन्य कई जानकारियाँ भी प्राप्त

होती हैं। जैसे शब्द किस भाषा का है, उसका लिंग क्या है, व्युत्पत्ति क्या है, मानक रूप क्या है, आदि। एक अच्छे शब्दकोश में हमें उक्त सभी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। शब्दकोश में सबसे महत्वपूर्ण है शब्दों का क्रम। इस के लिए कौन-से नियमों का पालन किया जाता है, इसकी जानकारी भी पाठ में दी जाएगी।

जब आप शब्दकोश का सही प्रयोग करना सीख लें तो उसके बाद पाठ में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ आप स्वयं ढूँढ सकते हैं।

4.2 भारत के त्योहार

1) भारतीय सभ्यता और संस्कृति की उन्नति में नाना जातियों, धर्मों एवं संप्रदायों का हाथ रहा है। संस्कृति की अभी तक कोई भी सर्वसम्मत परिभाषा नहीं बन पायी है। इसका कारण यह हो सकता है कि इसके संपूर्ण एवं व्यापक रूप का अवलोकन मनुष्य ने अभी तक नहीं किया है। संस्कृति के अंतर्गत मानव के द्वारा विकसित परम्पराएँ, रीति-रिवाज, आचार-विचार, साहित्य, धर्म, कला सभी कुछ का समावेश हो जाता है। त्योहार संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। त्योहार का मानव जीवन के साथ गहरा संबंध है। यह मानव के सम्मिलित उल्लास व उमंग का सूचक है। प्रत्येक देश का जन समुदाय आनंद मनाने के लिए त्योहार मनाता है। जिस प्रकार समय के साथ-साथ सभ्यता और संस्कृति में परिवर्तन आता है, उसी प्रकार त्योहार के स्वरूप में भी परिवर्तन आता है।

2) इस पाठ में हम भारत के त्योहारों की चर्चा करेंगे और देखेंगे कि किस प्रकार त्योहार भारतवासियों में सांस्कृतिक एकता एवं भाईचारे की भावना बढ़ाते हैं। हमारा देश गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक एवं कश्मीर से कन्याकुमारी तक विस्तृत भू-खण्ड में फैला हुआ है। एक ओर हिमाच्छादित पहाड़ियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर घने जंगलों से भरा प्रदेश। एक ओर मरुभूमि है तो दूसरी ओर विशाल उपजाऊ मैदान। भाषा, पहनावा, खान-पान, रीति-रिवाज, साहित्य, कला सभी क्षेत्रों में अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं से युक्त है हमारा देश। इस देश में त्योहार भी क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ मनाए जाते हैं। त्योहारों का संबंध प्रायः प्रकृति और धर्म से जोड़ा जाता है। कुछ त्योहार राष्ट्र या समाज में घटी महान घटना अथवा किसी महान व्यक्ति की याद में भी मनाये जाते हैं। ऐसे त्योहारों की चर्चा भी हम पाठ के अंतर्गत करेंगे जो हर वर्ष हमें देश की आज़ादी एवं महापुरूषों के बलिदान की कहानी याद दिला कर हममें देशभक्ति की भावना बढ़ाते हैं। आइए, अब हम देखें कि ये त्योहार किस रूप में मनाये जाते हैं; किस प्रकार ये विभिन्न जातियों, धर्मों, संप्रदायों के बीच सेतु का काम करते हैं और किस प्रकार ये हममें सद्‌गुणों का विकास करते हैं।

क) शरद ऋतु के प्रमुख त्योहार

3) हमारा देश कृषिप्रधान है। कृषि जीवन का आधार है। इसलिए हमारे कई त्योहार कृषि से जुड़े हैं। भारत में मुख्य रूप से दो फसलें होती हैं— रबी और खरीफ़। इन दोनों फ़सलों की कटाई के अवसर पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई त्योहार मनाए जाते हैं।

4) वर्ष में मुख्य दो नवरात्रे आते हैं। एक है शरद ऋतु का नवरात्र जो अश्विन शुक्ल प्रथमा से नवमी तक और दूसरा वासंतीय चैत्र मास की शुक्ल प्रथमा से नवमी तक। इन दोनों नवरात्रों का संबंध उपर्युक्त दोनों मुख्य फ़सलों से है।

5) शरद के त्योहार दुर्गा पूजा से आरंभ होकर दीपावली तक चलते रहते हैं। "दशहरा" या "नवरात्रि" या "विजयादशमी" का त्योहार संपूर्ण भारत में बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है। इन त्योहारों के मूल में प्रकृति-परिवर्तन, फसल की कटाई एवं धार्मिक मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं। ये धार्मिक मान्यताएँ मानव के सद्‌विचारों को ऊपर

उठाने में सहायता पहुँचाती हैं। शक्ति की प्रतीक देवी दुर्गा की आराधना पूरे देश में भिन्न-भिन्न रूपों में होती है। उत्तर पूर्वी भारत, विशेषकर बंगाल प्रांत में, माँ दुर्गा की दशभुजी, आकर्षक एवं विशाल प्रतिमाओं की स्थापना की जाती है। उत्तर पश्चिम भारत में देवी की पूजा के साथ ही रामलीलाओं का विशेष आयोजन होता है। इसकी समाप्ति रावण, मेघनाद, कुंभकर्ण के विशाल पुतलों को जलाने के साथ होता है। गुजरात राज्य में रात्रि जागरण एवं "अंबा" की पूजा के साथ उस राज्य का मनोहारी नृत्य "गरबा" का आयोजन होता है। दक्षिण भारत में यह त्योहार नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। प्रथम तीन दिन शक्ति की प्रतीक दुर्गा की आराधना की जाती है। उसके बाद तीन दिन धन की देवी लक्ष्मी की आराधना की जाती है और बाकी तीन दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा के साथ इसका समापन होता है। इस त्योहार के आगमन से संपूर्ण भारत में उल्लास-उमंग का वातावरण बन जाता है। मेलों में सभी संप्रदायों के लोग इकठ्ठे होकर आनंद मनाते हैं। इस प्रकार आपसी सौहार्द का वातावरण बनता है।

6) दीपावली हमारे देश का दूसरा महत्वपूर्ण त्योहार है। यह कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनायी जाती है। दीप मालिकाओं से अमावस्या की रात्रि में सारा वातावरण जगमगा उठता है। वर्षा ऋतु के तत्काल बाद मनाये जाने वाले इस त्योहार के अवसर पर लोग अपने घरों की रँगाई-पुताई कराकर नया रूप प्रदान करते हैं। दुकानों को भी सजाया-सँवारा जाता है। लोक मान्यता है कि अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र इसी दिन रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे थे। इसी खुशी में अयोध्यावासियों ने घरों को दीपमालिकाओं से सजा कर खुशी मनायी थी। उत्तर भारत में इस दिन धन की देवी लक्ष्मी तथा विघ्नहारी गणेश की पूजा होती है।

7) पूर्वी भारत में विशेषकर बंगाल प्रांत में इसे "काली पूजा" के नाम से भी मनाया जाता है। लोक मान्यता के अनुसार माँ काली ने अत्याचारी चंद-मुंड नाम के दैत्य का वध किया था।

8) दक्षिण भारत में इन त्योहारों को सात्विकता की आसुरी शक्ति पर विजय की याद में "नरक चतुदर्शी" के रूप में मनाया जाता है। लोक विश्वास के अनुसार श्रीकृष्ण ने इसी दिन नरकासुर का वध किया था।

9) वास्तव में इन त्योहारों के पीछे यही भावना निहित है कि हमारे अंदर दुर्गुणों का नाश हो एवं सद्गुणों का विकास हो। देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ और उनसे जुड़ी हुई कथाएँ प्रतीक रूप में हैं। जनसामान्य केवल कोरे उपदेश द्वारा प्रेरित नहीं किया जा सकता। यही कारण रहे होंगे जिनसे मूर्ति रूप में सात्विक एवं आसुरी शक्तियों का प्रदर्शन आरंभ हुआ होगा। दुर्गा की प्रतिमा देवताओं की सम्मिलित शक्ति का ही प्रतीक है। "महिषासुर" राक्षस की प्रतिमा आसुरी या राक्षसी प्रवृत्ति का प्रतीक है। विघ्न-बाधा के दूर होने पर ही किसी कार्य में प्रगति हो सकती है। इसी भावना से "विघ्न हरण" गणेश की प्रतिमा की पूजा होती है। गणपति को बुद्धिदाता एवं उनकी सवारी चूहे को विघ्न के रूप में समझा जाता है। यह प्रतीक है कि ज्ञान रूपी गणेश विघ्न रूपी चूहे को वश में रखते हैं। देवी लक्ष्मी की प्रतिमा समृद्धि का प्रतीक है। इसी प्रकार रावण, मेघनाद, एवं कुंभकर्ण रूपी आसुरी या बुराई की शक्तियों का विनाश सात्विकता या अच्छाई के प्रतीक "राम" द्वारा ही संभव है। वास्तव में मानव के अंदर मानवीय गुणों का विकास एवं आसुरी दुर्गुणों का नाश ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को ऊपर उठा सकता है।

ख) वासंतीय त्योहार

10) मकर संक्रांति हमारे देश का ऐसा त्योहार है, जिसके साथ ऋतु परिवर्तन, धार्मिक मान्यताएँ एवं फ़सल की कटाई का आनंद सब एक साथ जुड़े हुए हैं। यह त्योहार सारे देश में भिन्न-भिन्न नामों एवं धार्मिक रीति-रिवाजों और क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ मनाया जाता है। भारत के अधिकांश भागों में इसे संक्रांति के नाम से मनाया जाता है। संपूर्ण उत्तर भारत में इस दिन लाखों की संख्या में लोग पवित्र नदियों एवं कुंडों में

स्नान करते हैं तथा तिल एवं गुड़ का अर्पण कर सूर्य की पूजा करते हैं।

11) पंजाब, हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश में इसे "लोहड़ी" के नाम से मनाया जाता है। इसके आठ दिन पूर्व से ही लोग घर-घर जाकर लोक गीत गाते हैं। आठवें दिन "लोहड़ी "पर लोग इकठ्ठे होकर आग जलाते हैं एवं इसमें नए अन्न एवं तिल की आहुति देते हैं। महाराष्ट्र में इसे संक्रांति के नाम से मनाते हैं। विवाहित महिलाएँ घर-घर जाकर गुड़ और तिल से बने पकवान तथा नए अन्न बाँटती हैं।

12) तमिलनाडु में इस त्योहार को तीन दिन मनाते हैं। पहले दिन को भोगी कहते हैं। दूसरे दिन पोंगल के रूप में मनाते हैं, जिसमें नये बर्तन में मीठे भात पकाकर सूर्य को अर्पित क़रते हैं। तीसरे दिन खेती में सहायक बैलों एवं गायों का श्रृंगार करते हैं। आंध्र प्रदेश एवं उड़ीसा में इसे संक्रांति के नाम से ही मनाते हैं। तिल और गुड़ तथा नए धान्य से सूर्य की पूजा करते हैं।

13) मकर संक्रांति के बाद का महत्वपूर्ण त्योहार है बसंत पंचमी। यह त्योहार ऋतु परिवर्तन का सूचक है। इसका संबंध विद्या की देवी सरस्वती से भी जोड़ा जाता है। इसीलिए इस दिन स्कूलों में कक्षाओं को सजाया जाता है। पूर्वी भारत के राज्यों में देवी सरस्वती की मूर्ति स्थापित की जाती है। कई जगह छात्र-छात्राएँ पीले परिधान धारण करके आते हैं। चारों ओर का वातावरण ही जैसे बसंती हो जाता है। इसी दिन हिंदी के विख्यात कवि महाप्राण निराला की जयंती भी मनायी जाती है।

14) वासंतीय त्योहारों का चरम उत्कर्ष होली में व्यक्त होता है। फाल्गुन माह की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्योहार उल्लास और उमंग लेकर आता है। शायद ही कोई त्योहार ऐसा हो, जो इतने राग-रंग के साथ मनाया जाता हो। हिंदी प्रदेशों में माघ से ही "फाग" गाया जाने लगता है। होली के पहले दिन यानि फाल्गुन मास की समाप्ति पर होलिका-दहन होता है। दूसरे दिन लोग एक दूसरे से मिलते हैं, रंग-अबीर डालते हैं, गाते बजाते हैं।

ग) धर्म और त्योहार

15) हमारे देश में विश्व भर से कितनी ही जातियों, धर्मों एव संप्रदायों के लोग आये और भारत के निर्माण में अपना योगदान देते चले गये। इस देश ने सभी संस्कृतियों को अपने में पचाकर एकाकार कर लिया।

16) विश्व की अनेक संस्कृतियों के समन्वय का सबसे प्रमुख स्थल भारत ही है। विविधताओं के बीच एकता कायम करने की सर्वाधिक क्षमता हमारे देश में है। इसलिए कहा गया है कि "भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियाँ आ-आकर विलीन होती रही हैं। विश्वबंधुत्व की भावना इस देश में आज से नहीं प्राचीन काल से ही रही है।

"बसुधैव-कुटुम्बकम्" (सारी पृथ्वी एक परिवार है) की गूँज प्राचीन काल से आज तक इस देश में गूँज रही है।"

17) विश्व में ऐसी महान विभूतियाँ हुई हैं, जिनके विचार एवं उपदेश सारी मानव जाति के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। जैसे-जैसे विभिन्न जातियाँ इस देश में आती गयीं, वैसे-वैसे उनके साथ उनके धर्म के महापुरूषों की अमर वाणियाँ भी यहाँ आती गयीं। भारतीय जनमानस ने उन सबको अपनाया। यही नहीं, सभी धर्म प्रवर्तकों एवं महापुरूषों के उपदेशों को स्थायित्व देने एवं उनके स्मरण के लिए उनकी जयंती भी हर वर्ष हम त्योहारों के रूप में मनाने लगे। इस प्रकार इसी देश के जैन धर्म प्रवर्तक महावीर हों या इस्लाम धर्म के पैगंबर मोहम्मद हों, गीता के उपदेशक श्री कृष्ण हों या ईसाई धर्म प्रवर्तक ईसा मसीह हों, मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम हों या सिक्ख संप्रदाय के प्रवर्तक गुरू नानक हों, सभी की जयंतियाँ इस देश के त्योहार बन गयी हैं।

18) ईद इस्लाम धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो भारत में बड़े पैमाने पर मनाया

जाता है। ईद का त्योहार साल में दो बार मनाया जाता है— ईदुल फ़ितर और ईदुल जुहा। ईदुल फ़ितर रमज़ान के महीने के बाद आता है। रमज़ान के पूरे महीने मुसलमान रोज़ा रखते हैं। एक माह के रोज़े की सफलतापूर्वक समाप्ति के उपलक्ष में ईद मनायी जाती है। आखिरी रोज़े के अगले दिन ईद होती है। ईद चाहे कश्मीर हो या तमिलनाडु, राजस्थान हो या बंगाल, उत्तर प्रदेश हो या बिहार सभी जगह बड़े उत्साह-उमंग के साथ मनायी जाती है। "ईदगाह" में नए कपड़े पहने लोग नमाज अदा करने के लिए इकठ्ठे होते हैं। ईदगाह के मेले में लोग आनंद मनाते हैं। मीठी सेवइयाँ बाँटी जाती हैं। हिंदू एवं अन्य धर्म संप्रदायों के लोग अपने मुसलमान भाइयों के गले मिलकर ईद की मुबारकबाद देते हैं। ईदुल जुहा त्याग और बलिदान की स्मृति का त्योहार है। पैगंबर इब्राहीम ईश्वर के आदेश पर अपने प्रिय पुत्र की बलि देने को भी तत्पर हो गये थे। इसी तरह मुहर्रम भी भारत में सभी जगह मनाया जाता है, जो मुसलमानों के शिया सम्प्रदाय का त्योहार है। यह त्योहार हज़रत मोहम्मद साहब के नवासे और हज़रत अली के पुत्र हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की याद में मनाया जाता है। इस मौके पर ताज़िये भी निकाले जाते हैं, जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू भी सम्मिलित होते हैं।

19) सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक गुरू नानक देव की जयंती भी हर्षोल्लास के साथ मनायी जाती है। गुरू नानक देव ने धर्म के सच्चे स्वरूप का और हिंदू-मुसलमानों में भाईचारे का उपदेश दिया था। इस दिन प्रभात फेरियाँ निकाली जाती हैं एवं गुरूद्वारे में गुरूग्रंथ साहब का पाठ होता है। क्रिसमस के अवसर पर ईसाई धर्मावलंबी ईसा मसीह की जयंती मनाते हैं। इस दिन गिरजाघरों में प्रार्थनाएँ होती हैं।

घ) राष्ट्रीय पर्व

20) प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में कुछ दिन ऐसे होते हैं, जिन्हें राष्ट्र हमेशा याद रखता है। इसी तरह कुछ ऐसे अविस्मरणीय महापुरुष होते हैं, जो उस राष्ट्र को नयी दिशा देकर नये युग का प्रवर्तन कर जाते हैं।

21) ऊपर हमने देखा कि किस प्रकार विभिन्न संप्रदायों, धर्मों एवं जातियों के महापुरुषों की जयंतियाँ मनाकर हम अपनी राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबंधुत्व की भावना को मजबूत करते हैं। आगे हम देखेंगे कि वर्तमान भारत के निर्माण में कौन-कौन से विशेष दिन हैं एवं किन-किन महापुरुषों का विशेष योगदान रहा है। ऐसे दिवस एवं जन्मदिवस हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं।

22) 15 अगस्त, 1947 को हमारे देश ने विदेशी शासन से मुक्ति पायी। इस स्वाधीनता दिवस को हम भारतवासी बड़े उल्लास के साथ मनाते हैं। देश की स्वाधीनता के लिए सभी धर्मों और संप्रदायों के लोगों ने एकजुट होकर संघर्ष किया। देश के सभी हिस्सों से लोगों ने विदेशी सत्ता के खिलाफ़ आवाज उठाई और अपनी कुर्बानी दी। बहुत दिनों के संर्घष एवं अनगिनत लोगों के बलिदान के बाद हमें आज़ादी मिली। ऐसे स्मरणीय दिन को हम राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाते हैं। दिल्ली के लाल किले पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फ़हराते हैं और राष्ट्र को संबोधित करते हैं। इसी प्रकार 26 जनवरी, 1950 को हमारा देश "गणतंत्र" बना। इसी दिन सारे भारतवासियों को समानता का लोकतांत्रिक अधिकार प्राप्त हुआ था। भारत के संविधान के अनुसार जाति, धर्म, लिंग, संप्रदाय के आधार पर न कोई छोटा है न बड़ा। गणतंत्र दिवस भी बड़े उत्साह और उमंग से मनाया जाता है। मुख्य समारोह दिल्ली के विजय चौक पर राष्ट्रपति द्वारा ध्वजारोहण से होता है। सेना के सभी अंगों द्वारा विशेष परेड एवं देश की प्रगति की झाँकियाँ निकाली जाती हैं। इसी तरह के कार्यक्रम राज्य की राजधानियों एवं अन्य शहरों में भी होते हैं।

23) 2 अक्टूबर को हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती मनाते हैं। गांधी जी ने जहाँ देश की आज़ादी के आंदोलन का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन किया, वहीं अहिंसा की शक्ति द्वारा अंग्रेज़ी शासन से इस देश को मुक्ति दिलायी। गांधी जी के विचारों एवं कार्यों ने इस देश पर अमिट छाप छोड़ी है। अछूतोद्धार, सांप्रदायिक एकता एवं अहिंसा उनकी महान

देन है। 30 जनवरी, 1948 को एक धर्मांध व्यक्ति की गोली से इस अहिंसा के पुजारी का निधन हो गया। सारे विश्व में इस दुखद घटना से शोक छा गया था। हम हर वर्ष इस दिन को "शहीद दिवस" के रूप में मनाते हैं। इसी प्रकार 14 नवंबर को हम अपने प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की जयंती "बाल दिवस" के रूप में मनाते हैं। आधुनिक भारत के नवनिर्माण में नेहरू जी का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

24) इस प्रकार हमारे देश के त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाये जा रहे हों या नये वर्ष की आगवानी के रूप में, फ़सल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में हों या महापुरूषों की याद में, सभी अपनी विशेषताओं एवं क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त होने के साथ ही, देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को मज़बूती प्रदान करते हैं। ये त्योहार जहाँ जनमानस में उल्लास, उमंग एवं खुशी भर देते हैं, वहीं हमारे अंदर देशभक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ विश्वबंधुत्व एवं समन्वय की भावना भी बढ़ाते हैं। इनके द्वारा महापुरूषों के उपदेश हमें बार-बार इस बात की याद दिलाते हैं कि सद्विचार एवं सद्भावना, द्वारा ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकते हैं। इन त्योहारों के माध्यम से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि वास्तव में सभी धर्मों का मूल लक्ष्य एक है। केवल उस लक्ष्य तक पहुँचने के तरीके अलग-अलग हैं। अतः त्योहार हमारी स्वस्थ सांस्कृतिक विरासत की रक्षा, देश की एकता एवं विश्वबंधुत्व की भावना बढ़ाने में सहायक हैं।

बोध प्रश्न

1) नीचे दिये गये कथनों में से कुछ सही हैं, कुछ गलत। अपना उत्तर यह निशान (√) लगाकर दें :

   क) दीपावली का संबंध धर्म से भी है और प्रकृति से भी। ( ) सही ( ) गलत

   ख) त्योहारों का वर्तमान रूप प्राचीन काल से चला आ रहा है। ( ) सही ( ) गलत

   ग) उत्तर भारत में दशहरा और बंगाल में काली पूजा का त्योहार एक साथ मनाया जाता है। ( ) सही ( ) गलत

   घ) ईदुल जुहा त्याग और बलिदान की स्मृति का त्योहार है। ( ) सही ( ) गलत

2) नीचे दिये गये पर्वों को सही प्रतीकात्मक अर्थों से जोड़िए।

1)	लोहड़ी	क)	आसुरी शक्ति पर विजय
2)	काली पूजा	ख)	राष्ट्रीय भावना का विकास
3)	लक्ष्मी पूजा	ग)	नयी फ़सल की खुशी
4)	गणतंत्र दिवस	घ)	समृद्धि की आकांक्षा

3) पाठ के कुछ वाक्य नीचे दिये गये हैं। इन वाक्यों के तात्पर्य को दिये गये तीन कथनों में से एक सबसे सही रूप में व्यक्त करता है। उस कथन को बताइए।

   i) त्योहार, भारतवासियों में सांस्कृतिक एकता और भाईचारे की भावना बढ़ाते हैं।

      क) हमारी सांस्कृतिक एकता तथा भाईचारे की भावना को मजबूत करने में विभिन्न त्योहारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। [ ]

      ख) त्योहार ही एकमात्र उपाय है, जिससे सांस्कृतिक एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत किया जा सकता है। [ ]

      ग) धार्मिक त्योहारों से सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय त्योहारों से भाईचारे की भावना सुदृढ़ होती है। [ ]

ii) मानव के अंदर मानवीय गुणों का विकास एवं आसुरी दुर्गुणों का नाश ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को ऊपर उठा सकता है।

क) ईश्वरीय शक्ति के प्रकाश से मनुष्य अच्छा और आसुरी शक्ति से बुरा बनता है। [ ]

ख) केवल आसुरी दुर्गुण के नाश होने से मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है। [ ]

ग) मनुष्य में मानवीय गुण भी होते हैं और आसुरी दुर्गुण भी। अगर वह मानवीय गुणों का विकास करे और आसुरी दुर्गुणों का दमन, तो उसका व्यक्तित्व महान बन सकता है। [ ]

iii) सभी धर्मो ने अपने-अपने तरीकों से एक ही निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँचने की बात कही है।

क) ईश्वर को प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों में एकता लाना सभी धर्मों का लक्ष्य है। [ ]

ख) सभी धर्म एक ही सत्य की ओर संकेत करते हैं। [ ]

ग) धर्मों के तरीके अलग हैं, इसलिए उनके लक्ष्य अलग हैं। [ ]

4) इस पाठ में हमने एक मूल विचार लिया— **भारत के त्योहारों का वर्णन**। जैसा कि आप जानते हैं इस विशाल देश में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों के लोग रहते हैं। वे अपने-अपने त्योहार मनाते हैं। हिंदू धर्म में भी एक ही त्योहार अलग-अलग जगहों में अलग-अलग ढंग से मनाया जाता है। इस पाठ का हमारा उद्देश्य सिर्फ़ त्योहारों का वर्णन करना नहीं है। हम अपने मूल विचार को इस रूप में प्रकट करना चाहते हैं कि त्योहार सांस्कृतिक पर्व हैं और राष्ट्र के जीवन के द्योतक हैं। इसी विचार बिंदु को हम पाठ के रूप में विकसित कर रहे हैं और त्योहार मनाने के उद्देश्य, त्योहार एवं संस्कृति का संबंध और राष्ट्रीय त्योहारों का महत्व आदि बातों की चर्चा कर रहे हैं।

आगे पाठ के इन्हीं विचार बिंदुओं को अभिव्यक्त करने वाले कुछ वाक्य दिये गये हैं। आप कोष्ठक में दिये शब्दों में से सही शब्द को रखें और गलत को काट दें, जिससे वाक्य सार्थक बन जाए।

1) त्योहार मानव की (संस्कृति/सभ्यता) का महत्वपूर्ण अंग हैं।

2) त्योहार काल और (क्षेत्र/प्रकृति) के अनुसार बदलते हैं।

3) (मकर संक्रांति/नवरात्र) के अवसर पर दुर्गा पूजा और दशहरा के त्योहार मनाए जाते हैं।

4) सरस्वती (विद्या/धन-धान्य) की देवी मानी जाती है।

5) आसुरी शक्ति का तात्पर्य है हमारे (उच्च/निम्न) विचार और हमारा (सत्/विकृत) व्यवहार।

6) ऋतुओं से संबंधित त्योहारों को (प्राकृतिक/सामाजिक) त्योहार कहते हैं।

7) ऋतु परिवर्तन के त्योहारों में कुछ हद तक (धार्मिक/प्राकृतिक) मान्यताएँ भी जुड़ गई हैं।

8) लोहड़ी (पंजाब/गुजरात) राज्य और पोंगल (तमिलनाडु/महाराष्ट्र) राज्य का त्योहार है।

9) महापुरुषों के उद्देश्य और विचार (देश/मानव मात्र) के लिए कल्याणकारी होते हैं।

10) सर्वधर्म सद्भाव से राष्ट्रीय (एकता/प्रगति) को बल मिलता है।

11) देश के लिए बलिदान देने वाले महापुरूषों का जन्म दिवस (राष्ट्रीय/सांस्कृतिक) त्योहार कहलाता है।

12) 26 जनवरी, 1950 को भारत (स्वतंत्र/गणतंत्र) हुआ।

5) क) पैरा 8 एवं 9 में दो प्रकार के गुणों की चर्चा की गई है।

दोनों के अर्थ में आये हुए अन्य शब्दों को साथ में लिखिए।

i) सात्विक शक्तियाँ ii) आसुरी शक्तियाँ

....

....

....

ख) पैरा 2 में हमने बलिदान शब्द का इस्तेमाल किया है इसी भाव को स्पष्ट करने वाले अन्य शब्दों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) i) पैरा 5 से 9 तक में आसुरी शक्तियों के प्रतीक के रूप में जिनका उल्लेख किया गया है, उनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

ii) त्योहार मनाने के संबंध में हमने उल्लास शब्द का प्रयोग किया है। पूरे पाठ में इस तात्पर्य को व्यक्त करने वाले अन्य शब्दों को खोज कर लिखें।

.....

.....

.....

.....

7) निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दीजिए।

i) त्योहारों की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

ii) किन त्योहारों में प्रकृति और धर्म दोनों का संबंध है?

.....

.....

.....

.....

iii) राष्ट्रीय पर्वों के मनाने के तीन कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

iv) मुहर्रम क्यों मनाया जाता है?

.....

.....

.....

.....

4.3 शब्दकोश का उपयोग

आपने अभी भारतीय त्योहारों के बारे में पाठ पढ़ा। आपने देखा होगा कि यह पाठ पिछले पाठ से कुछ कठिन है। इसमें कई नये शब्द आये हैं और हमने पाठ के अंत में शब्दावली भी नहीं दी है। यह तो आप जानते ही हैं कि पुस्तकें, अखबार आदि पढ़ते समय आपको शब्दावली तो मिलती नहीं। हमने और पाठों में जो शब्दावली दी है, वह भी शायद सबके लिए काफी न हो। ऐसी स्थिति में शब्दों का अर्थ जानने का क्या तरीका है? कैसे नये शब्दों का अर्थ जान सकते हैं? इसके लिए आपको शब्दकोश देखने की आवश्यकता पड़ेगी?

पहले आप जानना चाहेंगे कि शब्दकोश में शब्द कैसे देखें, फिर उस शब्द का अर्थ कैसे ढूँढें। शब्दकोश से आपको न केवल शब्द का अर्थ मिल सकता है, बल्कि और भी कई सूचनाएँ मिलती हैं। आगे हम इन तीनों बातों की चर्चा करेंगे।

4.3.1 शब्द ढूँढना

आपने इकाई I में हिंदी की वर्णमाला का परिचय प्राप्त किया। अपने उस ज्ञान को दुहराने के लिए आगे दी गयी जगह में वर्णमाला को लिख लीजिए और उसके क्रम को ठीक से देखिए।

अ क च ट त प य श क्ष

1) वर्णमाला में वर्णों के इस क्रम को अकारादि क्रम कहते हैं (अकार + आदि)। "अकार" का अर्थ है वर्ण (अ)। अन्य वर्णों को भी हम "ईकार" "चकार" "तकार" आदि शब्दों से बता सकते हैं। शब्दकोश में सारे शब्द अकारदि क्रम से दिये जाते हैं, अर्थात् पहले "अकार" के शब्द, फिर "आकार" के शब्द। फिर "इकार" के शब्द। अगर आपको "गमला" शब्द ढूँढना हो तो (ख) के शब्दों और (घ) के शब्दों के बीच में देखिए। शब्द देने के इस क्रम को शब्दकोशीय क्रम (alphabetical order) भी कहते हैं।

2) हिंदी में अकार में कई हज़ार शब्द आते हैं। अकार के हजारों शब्दों में से एक को कैसे ढूँढा जाए। अकार के भीतर शब्दों को ढूँढने के लिए शब्द के दूसरे वर्ण में अकारादि क्रम को देखना होगा। अगर दूसरा वर्ण समान हो, तो तीसरा वर्ण देखना होगा। अगर तीसरा वर्ण भी समान हो, तो चौथा वर्ण देखना होगा। इस तरह क्रम से सभी वर्णों को देखते चलें, तो आप सही शब्द तक पहुँच जाएँगे। शब्दकोश के क्रम से आगे कुछ शब्दों को दिखा रहे हैं। ध्यान दीजिए।

दो वर्ण	**तीन वर्ण**	**चार वर्ण**	**पांच वर्ण**
कब	समझ	प्रदर्शक	राजनीतिक
कम	समन	प्रदर्शन	राजनीतिज्ञ
कर	समय		
कल	समर		
कश			

लेकिन शब्दकोश में छोटे-बड़े सभी तरह के शब्द साथ होते हैं। उस स्थिति में भी हर वर्ण क्रम के अनुसार, शब्दकोशीय क्रम देख सकते हैं। ऊपर के शब्दों के अलावा कुछ अन्य शब्दों को शब्दकोश के क्रम में रखा गया है, आप इनके क्रम को आगे के शब्दों में देख सकते हैं।

कंपन कब कबीला कम कमर कमरा कर करना कराना कल कला कलि कलिंग कली कश कशमकश कशिश कंस कहना पंजा पल पलंग पर प्रकाश प्रदर्शक प्रदर्शन प्रदर्शित प्रदूषण राज राजनीति राजनीतिक राजनीतिज्ञ राजा संकट सखा संभव समझ समन समय समर समरस सम्मान सम्मोह

आपने देखा होगा कि हिंदी में कुछ वर्ण हैं, जिन्हें वर्णमाला में दिखाया नहीं गया है। ये हैं:

ँ(अँ) (क) : (तः)

ड़ ढ़

क़ ख़ ग़ ज़ फ़

इनसे बनने वाले शब्दों को शब्दकोश में कैसे और कहाँ ढूँढा जाए? शब्दकोश में अनुनासिक (ँ) और (ं) अनुस्वार को एक माना जाता है। इनका स्थान वर्ण से पहले है। कुछ शब्दों का क्रम देखिए :

अंक	कंकड़	सबंद्ध
अकड़	कंटक	संबल
अकल	कँपकँपी	सब
अंग	कंपन	सबल
अगर	कपट	संबाध

इसी तरह बिंदी, विसर्ग और वर्ण का क्रम है :

अतंत्र अतः अतएव अनत

शेष वर्ण (ड़, ढ़, क़, ख़, ग़, ज़, फ़,) सामान्य वर्ण की तरह क्रम में आते हैं और वर्ण के नीचे की बिंदी (नुक्ता) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। शब्दकोश का क्रम देखिए :

ताक	जल	फ़ाका
ताक़त	जलज	फाटक
ताकना	ज़लज़ला	फ़ारिग़
ताज	जलद	फ़ासला
ताज़ा	ज़लील	फाहा

4) सवाल यह उठता है कि स्वर की मात्राओं और आधे व्यंजनों (संयुक्त वर्ण का पहला वर्ण) को कैसे ढूँढा जाए? दोनों का उत्तर एक ही है। व्यंजन और स्वर के योग का शब्दकोश क्रम निम्न प्रकार है, जहाँ हम हलंत को भी एक मात्रा के रूप में रखते हैं और उसे मात्राओं के अंत में रखते हैं। क्रम देखिए:

कं क का कि की कु कू कृ के कै को कौ क्

इस प्रकार कुछ शब्दकोशीय क्रम देखिए :

कंपन	बाला	रतंभ
कल	बालू	स्तन
काम	बाल्टी	स्तर
कृति	बाल्टू	स्तुति
कौन	बाल्य	स्तूप

5) तीन और अक्षर हैं जिनकी चर्चा करनी है। ये हैं: क्ष, त्र, ज्ञ।

इन तीनों को कहाँ ढूँढे? ये तीनों मुख्यतः व्यंजन हैं।

क + ष — क्ष ज + ञ — ज्ञ त + र — त्र

जैसे ऊपर संयुक्त वर्णों को ढूँढने के बारे में चर्चा की थी, उसी तरह इन्हें भी ढूँढ सकते हैं। कुछ शब्दकोशीय क्रम देखिए :

अक्ल	नक्श	जौ	सत्य
अक्ष	नक्शा	ज्ञात	सत्र
अक्षर	नक्षत्र	ज्ञान	सत्रांत
अक्षुण्ण		ज्ञेय	सत्रीय
अक्स		ज्यमिति	सत्व

अभ्यास

1) निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में रखिए। उत्तर इकाई के अंत में देख सकते हैं।

भक्ति, अंग, महानता, त्योहार, संस्कृति, पूर्वी, पढ़ना, बड़ा, मानव, प्रकृति, ऋतु, मुख्य, फसल, पंक्तियाँ महापुरुष, पूजा, भावना, ब्याज, जिक्र, तरक्की।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.3.2 शब्दार्थ ढूँढना

शब्द को ढूँढने के बाद आप शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे। पाठ में कई शब्द नये हैं, जैसे, सम्मिलित, हिमाच्छादित, प्रतिभा, सद्‌गुण, दहन, एकाकार, प्रवर्त्तक आदि। पाठ पढ़ने के साथ आपको चाहिए कि आप इन शब्दों का अर्थ देख लें, हाशिये में शब्दार्थ लिख लें और पुनः पाठ पढ़ें।

जब आप पाठ पढ़ते हैं, तो आपको कुछ-कुछ उसके अर्थ का आभास हो जाता है। शब्दकोश में शब्दों के कई अर्थ दिये हुए होते हैं। आप सही अर्थ चुन लें, तो वाक्य का पूरा अर्थ स्पष्ट हो जाता है। पाठ के पैरा 1 में "समावेश" आया है। "संस्कृति के अंतर्गत (....) धर्म, कला आदि का समावेश हो जाता है।" शब्दकोश में इसके कई अर्थ दिए हुए हैं।

सवारी, स्नातक।
समावृत्ति—स्त्री0 [सं0] दे0 'समावर्तन'; समाप्ति।
समावेश— पु0 [सं0] प्रवेश; साथ रहना; मिलना, एकत्र होना; अंतर्भाव, शामिल होना; प्रेतावेश; व्याप्त होना; साथ-साथ होना या घटित होना; भावावेश; मतैक्य; मनोनिवेश।
समावेशन— पु0 [सं0] प्रवेश; अधिकार में करना; विवाह— का संपन्न होना।
— वि0 [सं0] जिसका प्रवेश

इसके कई अर्थों में "शामिल होना" सबसे उपयुक्त अर्थ है। "संस्कृति के अंतर्गत (...) धर्म, कला आदि शामिल हैं।"

इन विभिन्न अर्थों में से उचित अर्थ ढूँढकर आप पाठ को समझ सकते हैं।

कभी-कभी आपको कोश में शब्द नहीं दिखाई पड़ेगा। जैसे "सद्‌गुण" शब्दकोश में शायद नहीं मिलेगा। तब क्या करें? आप सत् शब्द में इसे ढूँढ सकते हैं। आपको यह ज्ञान हो कि व्यंजन संधि में सत् का रूप सद् भी है, तो आप इसे सद् में देखेंगे। सद्‌गुण याने अच्छा गुण।

सदोषक— वि0 [सं0] दोषयुक्त, ऐबदार।
सद्—'सत्' का समासगत रूप। —**गति**—स्त्री0 अच्छी दशा; मोक्ष प्राप्ति; अच्छे आदमियों का तौर तरीका।
—**गव**— पु0 अच्छा साँड़। —**गुण** —वि0 अच्छे गुणों से युक्त। पु0 अच्छा गुण; सज्जनता। — **गुरु**— पु0 अच्छा गुरु, धर्मगुरु। — **ग्रंथ** — पु0 उत्तम ग्रंथ; सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करने वाला ग्रंथ। — **ग्रह** — पु0 शुभ लाभ और ईमादारी की ओर

शब्दार्थ ढूँढते हुए कई शब्दकोश आपको पर्याय (समान अर्थ वाले अन्य शब्द) विलोम (विपरीत अर्थ वाले शब्द) आदि के विवरण भी देते हैं

उदाहरण के लिए

खुशबू.....पर्याय सुगंध।

बदबू.....विलोम खुशबू।

कुछ शब्द बताये गये अर्थ के संदर्भ में वाक्य में अर्थ नहीं देते। जैसे "बत्तीसी" बत्तीस दाँतों का अर्थ देता है। लेकिन "बत्तीसी दिखाना" (यानि 32 दाँत दिखाना) क्या अर्थ देता है? ये मुहावरेदार प्रयोग हैं। शब्दकोश मुहावरों का अर्थ अलग से बताते हैं, जैसे— बत्तीसी दिखाना याने हँसना।

कभी-कभी एक शब्द के दो बिल्कुल विपरीत अर्थ होते हैं। जैसे पर (लेकिन), पर (पंख)। ऐसे शब्दों को हम बहुअर्थी शब्द (homonym) कहते हैं। कुछ कोश उन्हें दो अलग जगह, दो प्रविष्टियों के रूप में देते हैं। जैसे,

पर[1] (संज्ञा) — पंख

पर[2] (क्रि0 वि0) — लेकिन, मगर

कुछ कोश इन्हें एक ही जगह रखते हैं और अर्थ दिखाने का भिन्न तरीका अपनाते हैं। "बटोरना" के तीन अलग अर्थ हैं।

1) समेटना, जैसे काम समेटना।

2) जमा करना, जैसे, पैसा बटोरना।

3) फर्श पर पड़ी चीज़ों को इकठ्ठा करना आदि।

इन तीनों अर्थों को सेमीकोलन (;) से अलग करते हैं। इकठ्ठा करना, जमा करना, समान अर्थ वाले हैं, इन्हें कॉमा (,) से अलग करते हैं।

अर्थ सूचित करने के लिए कई और तरीके हैं। कुछ शब्दकोश प्रमुख अर्थ के साथ तारा चिह्न (*) देते हैं। ऐसे तरीकों के बारे में शब्दकोश के शुरू में स्पष्ट जानकारी दी जाती है। आप अपने कोश का उपयोग करने से पहले उसके शुरू के पन्नों को ठीक से देखिए।

अभ्यास

2) निम्नलिखित तीन **शब्दों** का अर्थ शब्दकोश में देखकर लिखिए। **शब्द** पूरे वाक्य में मोटे अक्षरों में छपे हैं।

   क) एक ओर **मरुभूमि** है तो दूसरी ओर विशाल उपजाऊ मैदान।

   .....

   ख) इन त्योहारों के मूल में धार्मिक **मान्यताएँ** जुड़ी हैं।

   .....

   ग) नदियाँ आ-आकर **विलीन** होती रही हैं।

   .....

4.3.3 शब्दकोश से अन्य सूचनाएँ प्राप्त करना

हमने इकाई 3 में उर्दू के शब्दों या स्पष्ट शब्दों में कहें तो फ़ारसी, अरबी शब्दों की चर्चा की थी। हमेशा आप ऐसे शब्दों को अपने ज्ञान से पहचान नहीं सकते। शब्दकोश हमें इस तरह की कई सूचनाएँ देता है। इन्हें उदाहरणों के साथ देखिए।

1) शब्दों का स्रोतः (फा.) - फारसी
(अ.) - अरबी
(सं.) - संस्कृत

2) शब्द का लिंगः पु. - पुल्लिंग
स्त्री. - स्त्रीलिंग

3) शब्द की व्युत्पत्तिः जैसे

[हि0 खा] खाने या खिलाने का काम।
संज्ञा स्त्री0 वह दाई या मजदूरनी जो बच्चों को खिलाती हो।
[खिलाड़, खिलाड़ी] —संज्ञा पुं0 [हिं0 खेल + आड़, आड़ी (प्रत्य0)] [स्त्री0 खिलाड़िन] 1. खेल करनेवाला। खेलनेवाला। 2. कुश्ती लड़न, पटा बनेठी खेलने या ऐसे ही और काम करने वाला। 3. जादूगर।
खिलाना — क्रि0 स0 [हिं0 खेलना का सं0 रूप] किसी को खेल लगाना। खेल करना।

4) शब्द का व्याकरणिक वर्ग : वि. — विशेषण
स. कि. — सकर्मक क्रिया
(संज्ञा देने की आवश्यकता नहीं है। अ. क्रि. — अकर्मक क्रिया)
इसे लिंग के रूप में देते हैं) अ. — अव्यय

5) एक शब्द से बनने वाले व्युत्पन्न शब्द : जैसे

कामना * — स्त्री0 दे0 'कार्मण'।
कार्मुक — पु0 [सं0] धनुष; धनुराशि; चाप। वि0 कर्मशीश
कार्य — पु0 [सं0] जो कुछ किया जाय या करना है, कर्त्तव्य; काम; धंधा, व्यवसाय; धार्मिक कृत्य; कारण का विकार, परिणाम; हेतु; नाटक का अंतिम फल। — **कर**— वि0 काम करने वाला; प्रभावकर* - कर्ता (तृ) — पु0 काम करनेवाला, कर्मचारी। —**कारणभाव**— पु0 कार्य और कारण का संबंध। —**कारी (रिन्)** — वि. किसी के स्थानपर अस्थायी रूप से काम करने वाला, कार्यवाहक (ऐक्टिंग)। — **काल**—पु0 कार्य करने का समय; किसी पदपर रहने का काल। - **कुशल** - वि0 काम में होशियार, दक्ष। — **क्रम** — पु0 होने या किये जाने वाले कार्यों का क्रम या उनकी सूची। — **ग्रहणकाल** — पु0 (जाइनिंग टाइम) किसी संस्था आदिमें या किसी पद्पर नियुक्त होने के बाद काम शुरू करनेका समय। — **परिषद्-स्त्री** (काउंसिल)

6) उच्चारण : अंग्रेजी के कोशों में उच्चारण देना अत्यावश्यक है। हिंदी कोशों में यह आवश्यक नहीं है।

7) भिन्न वर्तनी के रूपः हिंदी शब्द दो वर्तनी रूपों में आ सकते हैं। जैसे, बरतन, बर्तन। शब्दकोश इनमें एक को मूल मानता है और दूसरे के सामने "देखिए" की सूचना देता है।

इतने कम स्थान में शब्दकोश के सभी गुणों, उपयोगिता और प्रकारों की हम चर्चा नहीं कर सकते। हमारा इतना ही उद्देश्य है कि आप शब्दकोश के सही उपयोग करने का मार्ग देख लें और पढ़ते-पढ़ते कोश का अधिक अच्छा उपयोग करना सीख जाएँ।

3) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, शब्दकोश की सहायता से इन शब्दों के स्रोत, व्युत्पत्ति, लिंग, बताइए।

शब्द	शब्द का स्रोत या मूल शब्द	लिंग या व्याकरणिक वर्ग	व्युत्पत्ति
उपजाऊ	.....	.....	.....
आगमन	.....	.....	.....
सौहार्द	.....	.....	.....
विघ्नहारी	.....	.....	.....
सात्विकता	.....	.....	.....
आसुरी	.....	.....	.....
स्थायित्व	.....	.....	.....
धर्मावलंबी	.....	.....	.....
सांस्कृतिक	.....	.....	.....
एकता	.....	.....	.....

4.4 सारांश

इस इकाई को आपने ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। अब आप समझ गये होंगे कि त्योहारों का हमारे राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जीवन में कितना महत्व है। इस **इकाई** को पढ़ने के बाद आप :

- संस्कृति संबंधी विषय में प्रयुक्त भाषा की विशेषताओं को पहचान सकते हैं।
- संस्कृति संबंधी विषय में प्रयुक्त शब्दावली का सही प्रयोग कर सकते हैं।
- शब्दकोश का सही उपयोग कर सकते हैं।

4.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बृहत् हिंदी कोश : कालिका प्रसाद, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, राजवल्लभ सहाय संपादक प्रकाशक, ज्ञानमंडल, वाराणसी-।

4.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1)

क) सही ख) गलत ग) गलत घ) सही

2)

1) ग 2) क 3) घ 4) ख

3)

i) क ii) ग iii) ख

4)

1) संस्कृति 2) क्षेत्र 3) नवरात्र 4) विद्या

5) निम्न, विकृत 6) प्राकृतिक 7) धार्मिक

8) पंजाब, तमिलनाडु 9) मानव मात्र 10) एकता 11) राष्ट्रीय

12) गणतंत्र

5)

क) i) सद्‌गुण, मानवीय गुण, अच्छाई

ii) दुर्गुण, आसुरी, बुराई

ख) कुर्बानी, प्राणोत्सर्ग, न्योछावर

6) i) महिषासुर, रावण, चंड-मुंड, चूहा, नरकासुर, मेघनाद, कुंभकर्ण

ii) उमंग, आनंद, खुशी

7) i) जन सामान्य को प्रेरित करने के लिए सद्‌गुण एवं दुर्गुण को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करना तथा दुर्गुणों पर सद्‌गुणों की विजय बताना, कई त्योहारों का उद्देश्य होता है।

ii) मकर संक्रांति, होलीं, लोहड़ी, पोंगल, दीपावली आदि त्योहारों में प्रकृति एवं धर्म का समन्वय है।

iii) क) राष्ट्रीय भावना को मजबूत करना

ख) राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना

ग) राष्ट्रीय गौरव का स्मरण करना।

iv) मुहर्रम का त्योहार हजरत मोहम्मद साहब के नवासे (दोहित्र) और हजरत अली के पुत्र हजरत इमाम हुसैन की शहादत की याद में मनाया जाता है।

अभ्यास

1)

अंग, ऋतु, जिक्र, तरक्क़ी, त्योहार, पंक्तियाँ, पढ़ना, पूजा, पूर्वी, प्रकृति, फ़सल, बड़ा, ब्याज, भक्ति, भावना, महानता, महापुरुष, मानव, मुख्य संस्कृति।

2)

मरुभूमि — रेगिस्तान, जलरहित रेतीला मैदान।

मान्यताएँ — किसी सिद्धांत आदि का मान्य होना, किसी संस्था को स्वीकृति देना या प्रामाणिक मान लेना।

विलीन : जो अदृश्य हो गया हो, जो लुप्त हो गया हो, जो किसी दूसरे में मिल गया हो।

3)

शब्द	शब्द का स्रोत या मूल शब्द	लिंग या व्याकरणिक वर्ग	व्युत्पत्ति
उपजाऊ	हिंदी (उपज + आऊ प्रत्यय)	विशेषण	संस्कृति—उद् + पद् प्राकृत—उप्पज्ज
आगमन	आ (उपसर्ग)	संज्ञा, पुल्लिंग	गम् (संस्कृत)
सौहार्द	संस्कृत	संज्ञा, पुल्लिंग	सु + हृद् (संस्कृत)
विघ्नहारी	संस्कृत	संज्ञा, पुल्लिंग	विघ्न + हर + ई
सात्विकता	संस्कृत - सत्व	विशेषण	सत्व + इक + ता
आसुरी	असुर - संस्कृत	विशेषण	असुर + ई
स्थायित्व	स्थायी - संस्कृत	संज्ञा, पुल्लिंग	स्थायी - त्व

अनुकार्य

शब्दकोश का सही ढंग से प्रयोग करना सीखने के लिए इस इकाई में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ हिंदी शब्दकोश मे देखिए।